प्रातःक्लास 18/7/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्तिः बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। बच्चे समझते हैं हम आत्माओं को बाप समझाते हैं। और बाप अपन को आत्माओं का बाप समझते हैं। ऐसे कब कोई नहीं समझाते कि अपन को आत्मा समझो। यह बाप ही बैठ आत्माओं को समझाते हैं। इस ज्ञान की प्रारब्ध तुम नई दुनिया में लेने वाले हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। यह भी कोई सभी को याद नहीं रहता कि यह दुनिया बदलने वाली है। बदलने वाला बाप है। बहुत हैं जिनको इतनी समझ नहीं है। यहाँ तो सम्मुख बैठे हैं, जब घर में जाते हो तो सारा दिन अपने धंधे आदि में ही लग जाते हैं। बाप के लिए तो समझाया है जैसे कन्या होता है, वह जानती नहीं है हमको पति कौन सा मिलेगा। चित्र देखती है तो उनकी याद ठहर जाती है। कहाँ भी जावेंगे फिर दोनों ही एक/दो को याद करते हैं। उसको कहा जाता है शारीरिक जिस्मानी प्यार। यह है रूहानी प्यार। रूहानी प्यार किसके साथ? बच्चों का रूहानी बाप के साथ और बेहद के बच्चों के साथ। बच्चों का बच्चों साथ भी प्यार चाहिए। यानी आत्माओं का आत्माओं साथ। यह शिक्षा भी अभी तुम बच्चों को मिलती है। दुनिया के मनुष्यों को कुछ भी पता नहीं है। तुम आपस में भाई2 हो। तो वह आत्माओं का प्यार है। सभी भाई2 भी आपस में जरूर प्यार करते हैं; क्योंकि एक बाप के बच्चे हैं ना। उनको कहा जाता है रूहानी प्यार। ड्रामा प्लैन अनुसार सिर्फ पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही रूहानी बाप आकर रूहानी बच्चों को सम्मुख समझाते हैं। और बच्चे भी जानते हैं कि बाप अभी परमधाम में नहीं हैं। वह यहाँ आये हुए हैं। हम बच्चों को गुल2 पवित्र, पतित से पावन बनाकर सभी को ले जाते हैं। ऐसे नहीं कोई हाथ से पकड़कर ले जाते हैं। सभी आत्माएँ ऐसी उड़ेंगी जैसे मकड़ों का झुण्ड जाता है। उन्हों का भी जरूर कोई गाइड होता है। गाइड के साथ और भी गाइड्स होते हैं जो फरन्ट में रहते हैं। सारा झुण्ड जब इकट्ठा जाता है तो बहुत आवाज़ होता है। सूर्य के रोशनी को भी ढक देते हैं। इतना बड़ा झुण्ड होता है। तुम आत्माओं का तो कितना बड़ा अनगिनत झुण्ड है। असल वहाँ के रहने वाले हैं, यहाँ पार्ट बजाने आये हैं। असल में तुम सभी आत्माएँ परमधाम के निवासी हो। यह भी ज्ञान अभी मिला है, कैसे आत्माएँ यहाँ आकर पार्ट बजाती हैं। जब तुम देवताएँ हो, वहाँ तुमको यह याद नहीं रहता कि फलाने2 धर्म की आत्माएँ ऊपर में हैं। आत्माएँ ऊपर से आती हैं यहाँ शरीर धारण कर पार्ट बजाती हैं। यह चिन्तन वहाँ नहीं चलता। यह भी बातें तुम अभी समझते हो हम आत्माएँ परमधाम में रहने वाली हैं। आगे यह पता नहीं था। बाबा भी परमधाम में रहते हैं वहाँ से ही आकर इस शरीर में प्रवेश करते हैं। अभी वह किस शरीर में प्रवेश करते हैं वह पता तो बतला दी है। तुम लिखते भी हो शिवबाबा केअर आफ ब्रह्मा। ऐसे नहीं लिखते हो शिवबाबा केअर परमधाम। परमधाम में तो चिट्ठी जा न सके। तुम लिखते ही हो परमपिता परमात्मा शिव केअर आफ फिर यहाँ की एड्रेस डालते हो; क्योंकि तुम जानते हो बाप यहाँ है यहाँ ही आते हैं। कल्प2 बाप एक ही बार। कब गिनत(ी) नहीं कर सकते। यहाँ मनुष्यों की भी गिनती नहीं कर सकते हैं। अनगिनत हैं। भल मनुष्य आदमशुमारी निकालते हैं वह भी एक्युरेट नहीं निकालते हैं। आत्माएँ कितनी हैं वह भी हिसाब कब निकाल नहीं सकते। यह तो ऐसे ही अन्दाजा लगाये लिख दिया है। बाप भी कहते हैं अन्दाजा लगाया जाता है कि सतयुग में कितने थोड़े मनुष्य होंगे; क्योंकि सिर्फ भारत ही रह जाता है। तुम्हारी बुद्धि में है हम विश्व के मालिक बन रहे हैं। आत्मा जब शरीर में है तब दोनों इकट्ठे (आत्मा और शरीर अर्थात् जीवात्मा) सुख अथवा दुख भोगती है। ऐसे बहुत सन्यासी लोग समझते हैं आत्मा ही परमात्मा है। वह कब दुख नहीं भोगती। निर्लेप है। बहुत बच्चे इ(स) बात में मुँझते हैं कि हम अपन को आत्मा निश्चय तो करें, फिर बाप को याद कहाँ करें? यह तो जानते हैं बाप परमधाम का निवासी है। सभी आत्माओं को बाप है। यह तो निश्चय है बाबा ने परिचय दिया है कहाँ भी चलते–फिरते बैठते बाप को याद करो। बाप रहते हैं परमधाम में। तुम्हारी आत्मा भी वहाँ के रहने वाली हैं। फिर पार्ट बजाने आती है तो यहाँ ही रहते हैं ना। आत्मा जानती हैं हम इस रथ में प्रवेश कर आते हैं। तुम लिखते भी

हो शिवबाबा को याद करती हो तो यहाँ करती हो ना। जबकि बाप यहाँ आये हैं तो तुम चिट्ठी भी यहाँ लिखते हो यहाँ ही याद करते हो। जिन जिन को परिचय मिला है, समझ मिली है बाप कहाँ है। बाप को हम कहाँ याद करें? यह ज्ञान तो मिल गया बाप यहाँ आये हुए हैं। बाबा अभी परमधाम में नहीं रहते हैं। बाबा यहीं रहते हैं। चिट्ठी भी तुम ऐसे लिखते हो शिवबाबा केअर आफ ब्रह्मा..... कहाँ याद करेंगे। सिर्फ बुद्धि यहाँ ही जावेगी शिवबाबा इस शरीर में आये हैं। यूँ तो आत्माएँ भी ऊपर में रहने वाली हैं। भाई2 हैं। बाप कहते हैं तुम आत्माएँ भाई2 हो। सदैव ऐसे ही समझो। तो जरूर यहाँ समझेंगे ना। यह आत्मा है, इनका नाम फलाना है। आत्मा आत्मा को यहाँ देखती है; परन्तु मनुष्य देह अभिमान में आ जाते हैं। बाप देहीअभिमानी बनाते हैं। बाप कहते हैं तुम अपन को आत्मा समझो और मुझे याद करो। इस समय बाप समझाते हैं जब मैं यहाँ आया हुआ हूँ इस शरीर में तो अभी ऊपर में नहीं हूँ। यहाँ ही आकर बच्चों को ज्ञान भी देता हूँ। तो जरूर यहाँ ही रहेंगे और प्रैक्टिकल में। उनको बुलाना होता है। उनकी यह ऑरगन्स है। पुराने ऑरगन्स लिए हैं। बाप खुद कहते हैं मैं यह पुराना शरीर रूपी ऑरगन्स लेता हूँ। जिसमें मुख्य यह मुख भी है आँखें भी हैं। ज्ञानामृत मुख से मिलता है। गऊमुख कहते हैं ना। अर्थात् माता का मुख। यह है बड़ी माता। इन द्वारा तुमको एडाप्ट करते हैं। कौन? शिवबाबा तो यहाँ ही है ना। यह ज्ञान सारा बुद्धि में रहना चाहिए। बाप कहते हैं मैं तुमको प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा एडाप्ट करता हूँ। तो यह माँ भी हो गई ना। गाया भी जाता है तुम मात–पिता हम बालक तेरे। तो वह सभी आत्माओं का बाप है। उनको माता नहीं कहेंगे। वह तो बाप है। बाप से वरसा मिलता है। फिर माता चाहिए यहाँ। वहाँ तो बाप है। वह यहाँ आते हैं। अभी तुमको मालूम पड़ा है। बाप ऊपर में रहते हैं। फिर यहाँ आते हैं पार्ट बजाने। दुनिया को इन बातों का कुछ भी पता नहीं है। वह तो ठिक्कर–भित्तर में परमात्मा को कह देते। फिर तो अनगिनत हो जाये। इसको कहा जाता है घोर–अंधियारा। गायन भी है ज्ञान सूर्य प्रगटा अज्ञान अंधेर विनाश। इस समय तुमको ज्ञान है यह है रावण राज्य। जिस कारण अंधियारा है। वहाँ तो रावण होता ही नहीं। इसलिए कोई विकार नहीं। देह–अभिमान भी नहीं। वहाँ तुम आत्म–अभिमानी रहते हो। आत्माओं को ज्ञान है अभी हम छोटा बच्चा हैं। अभी जवान बना है। अभी वृद्ध शरीर हुआ है इसलिए अभी यह शरीर छोड़ दूसरा नया लेना है। वहाँ ऐसे नहीं कहते कि फलाना मर गया। वह तो है ही अमरलोक। खुशी से एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं। अभी आयु पूरी होती है यह छोड़ नया लेना है। इसलिए सन्यासी लोग सर्प का मिसाल देते हैं। मिसाल वास्तव में बाप का दिया हुआ है वह फिर सन्यासी लोग उठाते हैं। तब बाप कहते हैं यह जो ज्ञान मैं तुमको देता हूँ यह प्रायः लोप हो जाता है। बाबा के अक्षर भी हैं, वह चित्र भी हैं; परन्तु जैसे आटे में लुन। तो बाप बैठ अर्थ समझाते हैं। जैसे सर्प पुराना खल आपे ही छोड़ देता है और नई खल आ जाते हैं। उनके लिए ऐसे नहीं कहेंगे एक शरीर छोड़ दूसरा में प्रवेश करते हैं। नहीं। खल बदलने का एक सर्प का मिसाल है। वह खल इसके देखने में भी आते हैं। जैसे कपड़ा उतारा जाता है वैसे सर्प खल छोड़ देता, दूसरी मिल जाती है। सर्प तो जीता ही रहता है। ऐसे भी नहीं सदैव अमर रहता है। दो/तीन खल बदली कर फिर मर जावेगी। वहाँ भी समय पर तुम एक खल छोड़ दूसरा ले लेते हो। जानते हो अभी हमको गर्भ में जाना है। सर्प तो गर्भ में नहीं जाता। वह सिर्फ खल बदलते हैं। वहाँ तो है ही योगबल की बात। योगबल से ही तुम जाते हो इसलिए अमर कहा जाता है। आत्मा कहती है अभी मैं बूढ़ा हो गया हूँ। शरीर पुराना हुआ है। सा0 हो जाता है। अभी हम जाकर छोटा बच्चा बनूँगा। आपे ही शरीर छोड़ आत्मा भागकर जो छोटे बच्चे में प्रवेश करती है। उस गर्भ को जेल नहीं, महल कहा जाता है। पाप तो कोई होता नहीं जो भोगना पड़े। गर्भ महल में आराम से रहते हैं। दुख की कोई बात ही नहीं। न तो कोई ऐसी गंदी चीज़ आदि ही खाते हैं। जिससे बीमारी हो। यहाँ तो बहुत गंद खाते हैं। जिसका असर फिर अन्दर बच्चे पर पड़ता है। तो

बाप वहाँ की रसम आदि भी समझा रहे हैं। अभी बाप कहते हैं बच्चे तुमको निर्वाणधाम जाना है। यह दुनिया बदलनी है। पुरानी से फिर नई होगी। हर एक चीज़ बदलती है। झाड़ से कितनी बीज़ निकलती है। फिर सभी बीज लगाओ तो कितना फल निकलता है। एक बीज से कितनी डाली–टहनी निकलती है। सतयुग में एक ही बीज से एक ही बच्चा पैदा होता है योगबल से। यहाँ तो विकार से 5/7 बच्चे पैदा होते हैं। सतयुग और कलियुग में बहुत फर्क है। बाप ही बतलाते हैं। नई दुनिया फिर पुरानी होती है। पुरानी कैसे होती है वह 84 जन्म भी समझाया है। यह भी बच्चों को समझाया बाबा परमधाम में नहीं है। जैसे हम आत्माएँ यहाँ आकर शरीर लेती हैं तो वहाँ जगह खाली हो जाती है। बाबा भी यहाँ आये हैं पढ़ाने तो वह जगह खाली हो गई। पहले तुम जाते हो या बाप जाते हैं बात एक ही है। जो भी आत्माएँ जावेंगी हरेक अपने2 जगह में जाकर खड़ी रहेंगी। जगह बदलती नहीं है। अपने2 धर्म में अपने जगह पर नम्बरवार जाकर खड़ी होंगी। फिर नम्बरवार ही नीचे आना है। इसलिए छोटी मॉडल बनाकर रखी है मूलवतन की। वहाँ देवी–देवताओं का सेक्शन अलग है। सभी धर्मों का अपना2 है। यह तो समझ गये हो देवी देवताएँ का है पहला धर्म। फिर नम्बरवार और आते हैं। नम्बरवार ही जाकर रहेंगे। तुम भी नम्बरवार पास होते हो। उन मार्कस के हिसाब से जगह लेते हैं। यह बाप की पढ़ाई कल्प में एक ही बार होती है। पिछाड़ी में इम्तहान होता है। उसमें भी नम्बरवार होते हैं। तुम आत्माओं का कितना छोटा सिजरा होगा। जैसे यहाँ तुम्हारा इतना बड़ा झाड़ है वहाँ भी ऐसे ही सेक्शन हैं। यह झाड़ आदि भी तुम बच्चों ने दिव्य दृष्टि से देखकर फिर यहाँ बैठ बनाये हैं। आत्मा कितनी छोटी है। शरीर कितना बड़ा है। मनुष्यों को तो जगह चाहिए ना। सभी आत्माएँ वहाँ जाकर बैठेंगी। बहुत थोड़े जगह में नजदीक जाकर रहते हैं। शोभेंगे भी तब। आत्माओं का कितना छोटा झाड़ होगा। यहाँ तो मनुष्यों का झाड़ कितना बड़ा है। मनुष्यों को तो जगह चाहिए ना चलने, फिरने, घूमने आदि का। नौकरी आदि करने की सभी जगह चाहिए। निराकारी दुनिया में आत्माओं को कितनी छोटी जगह होगी इनके भेट में। इसलिए इन चित्रों में भी दिखाया है आत्माएँ वहाँ बहुत छोटी2 रहती हैं। नम्बरवार ही आते हैं। यह बना बनाया नाटक है। शरीर छोड़ आत्माओं को वहाँ जाना होता है। तुम बच्चों की बुद्धि में है हम कैसे रहते हैं और दूसरे धर्म वाले कैसे रहते हैं। कैसे अलग2 हैं। फिर अलग2 आते हैं नम्बरवार। देवताओं के बाद इस्लामी, बौद्धी आदि आते हैं। इनके पहले तो आ नहीं सकते। यह सभी बातें तुमको कल्प में एक ही बार बाप सुनाते हैं। बाकी तो सभी हैं जिस्मानी पढ़ाई। उनकी रूहानी पढ़ाई नहीं कह सकते। अभी तुम समझते हो हम आत्मा हैं। आई माना आत्मा। माई माना मेरा शरीर। मनुष्य यह नहीं जानते। उन्हों का तो सदैव शारीरिक सम्बन्ध ही रहता है। सतयुग में भी शारीरिक सम्बन्ध होगा; परन्तु वहाँ तो तुम आत्म–अभिमानी रहते हो। यह पता पड़ता है कि हम आत्मा हैं। यह हमारा शरीर अभी वृद्ध हो गया है। इसलिए हम आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं। इसमें मुँझने करने की भी बात नहीं। तुम बच्चों को तो बाप से राजाई लेनी है जरूर। बेहद का बाप है ना। मनुष्य जबतक ब्राह्मण बना नहीं है, ज्ञान को पूरा न समझा है, और भक्तिमार्ग वाले हैं तो प्रश्न ही भक्ति मार्ग के पूछेंगे। ज्ञान होता ही है तुम ब्राह्मणों में। तुम ब्राह्मणों का वास्तव में मंदिर भी अजमेर है। एक होते हैं पुष्कर ब्राह्मण। दूसरे होते हैं सारसद। अजमेर में ब्रह्मा का मंदिर देखने जाते हैं। ब्रह्मा बैठा हुआ है। दाढ़ी आदि दी हुई है। उनको मनुष्य के रूप में दिखाते हैं। तुम ब्राह्मण ही मनुष्य के रूप में हो। ब्राह्मण को देवता नहीं कहा जाता। सच्चा2 ब्राह्मण तुम हो ब्रह्मा के औलाद। उन्हों को यह पता नहीं है हम प्रजापिता ब्रह्मा के औलाद हैं। पीछे आने वालों को यह मालूम नहीं पड़ता है। तुम्हारा जो विराट रूप है यह भी बुद्धि में याद रहना चाहिए। यह सारी नॉलेज है जो तुम कोई को भी अच्छी रीत समझा सकते हो। हम आत्मा हैं। बाप के बच्चे हैं। यह यर्थात रीति समझकर यह निश्चय पक्का2 होना चाहिए। यह तो यर्थात बात है सभी आत्माओं का बाप एक परमात्मा है। सभी उनको याद करते हैं

हैं हे भगवान, हे ईश्वर। मनुष्यों के मुख से जरूर निकलता है। परमात्मा कौन है यह भी कोई नहीं जानते हैं। जब तक बाप आकर समझावें। बाप ने समझाया है यह ल0ना0 जो विश्व के मालिक थे यह ही नहीं जानते तो ऋषि–मुनि आदि भी फिर कैसे जानते होंगे। अभी तुमने बाप द्वारा जाना है। अभी तुम समझते हो हम हैं आस्तिक। बाकी सभी हैं नास्तिक। अभी हम रचयिता और रचना के आदि–मध्य–अन्त को जानते हैं। कोई अच्छी रीत जानते हैं कोई कम। बाप सम्मुख आकर पढ़ाते हैं फिर कोई अच्छी रीत धारण करते हैं, कोई कम धारण करते हैं। पढ़ाई बिल्कुल सहज है तो बड़ी भी है। बाप में इतना ज्ञान है जो सागर मस बनाओ, तो भी अन्त नहीं पा सकते। बाप बहुत सहज कर भी समझाते हैं। सिर्फ बाप को जानना है और स्वदर्शनचक्रधारी बनना है। बस। जास्ती कुछ भी बात करने की दरकार नहीं रहेगी। सेन्सीबुल जो होंगे वह झट दो अक्षर से ही समझ जावेंगे बरोबर बाप आकर स्वर्ग की स्थापना करते हैं। अभी तो हम नर्क में हैं। 84 लाख जन्म तो होता ही नहीं। बाकी हाँ 84 जरूर हैं। सतोप्रधान, सतो रजो तमो तमोप्रधान इन स्टेजस में सभी आते हैं। आधा कल्प में हैं सूर्यवंशी चन्द्रवंशी। फिर आधा कल्प के बाद फिर यह सभी आते हैं। बुद्धि काम करती है एक बार बाप का परिचय मिला और 84 का चक्र समझाया। फिनीश। रचयिता और रचना के आदि, मध्य, अन्त का राज समझाया उसमें सभी आ जाता है। बात तो बिल्कुल थोड़ी है। बाकी है डिटेल जिसमें टाइम लगता है। सतयुग में तुम बिल्कुल पवित्र रहते हो फिर त्रेता में दो कला कम हो जाती है। उनको सेमी स्वर्ग कहेंगे। स्वर्ग भी नहीं। मनुष्य तो स्वर्ग को भी नहीं जानते। स्वर्ग है ही नई दुनिया। त्रेता तो फिर 25% पुराना हो गया। आगे चल तुम्हा(रा) जब प्रभाव निकलेगा तो गवर्मेन्ट आपे ही तुमको मकान, कॉलेज आदि देते रहेंगे। समझेंगे बरोबर यह तो सभी की कैरेक्टर्स सुधारते हैं। यहाँ तो सभी करैक्टर्स बहुत खराब हैं। तुम्हारी है देवी कैरेक्टर्स। उनका है आसुरी। तुम कहेंगे अभी इन सभी के कैरेक्टर्स सुधारो। तुमको बुलावेंगे। यह भी समझते हैं, सभी की कैरेक्टर्स तो सुधरेगी नहीं। तो भी बहुतों के सुधार सकते हो। पावन बनने से दैवी–कैरेक्टर्स बन जाती है। पतित हैं तो आसुरी कैरेक्टर्स होती है। पावन बनने से दैवी कैरेक्टर्स बनते हैं। यह तुम जानते हो अभी तुम पवित्र बनते हो। तुम्हारी कैरेक्टर्स भगवान आकर सुधारते हैं कोई मनुष्य नहीं है। तुम भगवान द्वारा सुधर कर औरों को भी सुधारते हो। सिवाय ब्राह्मणों के और कोई कैरेक्टर्स सुधार न सके। इसके लिए ही हंगामे अत्याचार आदि होते हैं। अभी दिन प्रति समय कम हो जाता है। पुरुषार्थ यही करना है एक के सिवाय दूसरा कोई याद न रहे। मेरा तो एक शिवबाबा दूसरा न कोई। गन्धर्वी विवाह वाला युगल भी याद न रहे। एक शिवबाबा। बस। अन्त समय शिवबाबा की ही याद हो। वह लोग तो गाते हैं गंगा का तट हो, मुख में गंगा जल हो तब प्राण तन से निकलें; क्योंकि पतित पावन गंगा को समझते हैं। अभी तुम समझते हो पावन बनाने वाला तो एक ही बाप है। तो एक सिवाय और कोई याद न रहे। यह मेहनत करनी पड़े। बाकी यह भोग आदि लगाना यह न ज्ञान है न योग है। इन बातों से कोई कनेक्शन नहीं है। इसमें मुँझने की दरकार नहीं। अच्छा। बच्चों को यादप्यार गुडमार्निंग। नमस्ते।

(रही हुई प्वाइंट्स):– तुम बच्चों को बाप बहुत प्यार से बैठ समझाते हैं। स्कूल में स्टुडेन्ट भूल करते हैं तो टीचर सजा देते हैं। यहाँ बाप सजा नहीं देते। माया सजा दे देती है। पद भ्रष्ट कर देती है। जन्म–जन्मान्तर, कल्प–कल्पान्तर लिए अगर तुम उल्टा काम करते हो तो। शिवबाबा को भी धोखा दे देते हैं। शिवबाबा की सर्विस को छोड़ा गोया शिवबाबा को धोखा दिया। तो उनकी बहुत भारी सजा हो जाती है। अनेक प्रकार की डिससर्विस कर लेते हैं। बाप का हाथ तो कब नहीं छोड़ना चाहिए नहीं तो माया हप कर लेती है; परन्तु माया छूड़ा देती है। माया की ग्रहाचारी बैठती है तो ख्यालात आती है छोड़ने। जाकर यह करें। ऐसे करते भाग जावेंगे। बाबा भी (माया को) कहेंगे इनको कच्चा ही खाओ। छोड़ना नहीं। अच्छा ग्राहक मिला है। आश्चर्यवत भागन्ती..... यह तो गायन है ना। जो पास्ट हो गया है वह परजेन्ट होता है। तुम्हारी माया साथ लड़ाई है ना। आश्चर्यवत कथन्ती, सुनन्ती फिर माया की चिन्तन पड़न्ती, माया हप करन्ती। अच्छा।